देश की अखंडता का सर्वोच्च माध्यम है हिन्दी

डॉ. एस.एस.सी. शेनॉय
निदेशक, इंकॉइस
हैदराबाद

भारत में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, परन्तु इसके बावजूद हमारे देश में एकता है। इसका संपूर्ण श्रेय हिन्दी भाषा को जाता है। हिन्दी भाषा के कारण ही पूरा भारत एक सूत्र में बंधा हुआ है। 'हिन्दी-दिवस' के शुभ अवसर पर देश की सभी संस्थाओं में अति उत्साह के साथ विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। राष्ट्रभाषा को जीवंत बनाये रखने के लिए मात्र एक दिन 'हिन्दी-दिवस' के रूप में मनाने से हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता, बल्कि इसके लिए हमें सतत प्रयासरत रहना होगा। भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंकॉइस) में अनेक प्रकार की सेवाएँ हैं, जो जनमानस की भलाई और सुरक्षा की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। हमारे संस्थान का हमेशा से एक ही लक्ष्य रहा है कि वैज्ञानिक शोध से जुड़ी सभी जानकारियाँ सरल एवँ सहज भाषा में जन-जन तक पहुँचे। इसके लिए हिन्दी से सरल और सहज कोई अन्य भाषा नहीं हो सकती। प्राय: हम सुनते हैं कि हिन्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को अभिव्यक्त करने में सक्षम नहीं है। यह धारणा बिल्कुल असत्य एवं निराधार है। हिन्दी पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है तथा सभी प्रकार की प्रगतिपरक संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण के लिए सर्वथा सक्षम है।

इस वर्ष 28-29 सितम्बर, 2015 को इंकॉइस में राष्ट्रीय हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस संगोष्ठी का मुख्य विषय 'हमारे जीवन में सागर की भूमिका-एक वैज्ञानिक दृष्टीकोण' है, जिसके अंतर्गत विभिन्न वैज्ञानिक मुद्दों पर चर्चा की जाएगी। इस संगोष्ठी का आयोजन पूर्ण रूप से हिन्दी में किया जाएगा ताकि साधारण जनमानस भी इससे लाभान्वित हो सकें। यह संगोष्ठी इस अर्थ में भी प्रासंगिक है कि इस वर्ष हम भारत में महासागर विज्ञान की 50वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं, जो 1962-65 के बीच अंतर्राष्ट्रीय हिंद महासागर अभियान के साथ शुरू हुआ था। भारतीय वैज्ञानिकों ने इस अभियान के दौरान पहली बार (20 देशों ने भाग लिया) संयुक्त समन्वित अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रयासों के परिणामस्वरूप भाग लिया और उसके उपरान्त भारत में अनेक राष्ट्रीय समुद्री संस्थान स्थापित किए गए।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत की अखंडता को बनाये रखने के लिए हिन्दी ही सर्वोच्च माध्यम है।